

माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं व्यक्तित्व विकास में अभिभावकीय शिक्षा और पारिवारिक आय की भूमिका

सुशील दत्त उपाध्याय¹ एवं डॉ. पवन कुमार शर्मा²

¹ शोधार्थी, शिक्षा-विभाग

²सहायक प्रोफेसर, शिक्षा-विभाग

मोनाड विश्वविद्यालय, हापुर

सारांश

माध्यमिक विद्यालय की अवस्था विद्यार्थियों के जीवन की अत्यंत महत्वपूर्ण विकासात्मक अवस्था है। इस अवधि में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के साथ-साथ उनके व्यक्तित्व, आत्मविश्वास, आत्म-अवधारणा, अनुशासन, सामाजिक व्यवहार, भावनात्मक संतुलन तथा उत्तरदायित्व की भावना का भी विकास होता है। विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि और व्यक्तित्व विकास अनेक व्यक्तिगत, पारिवारिक, विद्यालयी तथा सामाजिक कारकों से प्रभावित होते हैं। इनमें अभिभावकों की शैक्षिक योग्यता तथा परिवार की आर्थिक स्थिति का विशेष महत्व है। अभिभावकों की शिक्षा बच्चों के अध्ययन के प्रति दृष्टिकोण, गृहकार्य में सहायता, शैक्षिक मार्गदर्शन, भाषा-विकास, अध्ययन की आदतों तथा भविष्य की शैक्षिक आकांक्षाओं को प्रभावित कर सकती है। दूसरी ओर, पारिवारिक आय बच्चों को उपलब्ध अध्ययन सामग्री, पुस्तकों, तकनीकी साधनों, पोषण, निजी अध्ययन स्थान तथा सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों के अवसरों को प्रभावित कर सकती है।

मुख्य संकेतक: - माध्यमिक विद्यालय, विद्यार्थी, शैक्षिक उपलब्धि, व्यक्तित्व विकास, अभिभावकीय शिक्षा, सीखने की प्रवृत्ति।

परिचय

शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का प्रमुख साधन है। विद्यालय में विद्यार्थी केवल विषय संबंधी ज्ञान ही प्राप्त नहीं करता, बल्कि उसके व्यक्तित्व, सामाजिक व्यवहार, नैतिक मूल्यों, आत्मविश्वास, अनुशासन तथा उत्तरदायित्व की भावना का भी विकास होता है। माध्यमिक विद्यालय की अवस्था इस दृष्टि से विशेष महत्वपूर्ण है क्योंकि इस समय विद्यार्थी बाल्यावस्था से किशोरावस्था की ओर बढ़ता है। इस अवधि में उसकी सोचने-समझने की क्षमता, सामाजिक संबंध, भावनात्मक प्रतिक्रियाएँ तथा भविष्य संबंधी आकांक्षाएँ तेजी से विकसित होती हैं। इसलिए इस अवस्था में प्राप्त पारिवारिक और विद्यालयी अनुभव उसके आगे के जीवन को प्रभावित कर सकते हैं।

विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि को सामान्यतः उसकी परीक्षा में प्राप्त अंक, कक्षा में प्रदर्शन, विषय संबंधी दक्षता, अध्ययन की निरंतरता तथा शैक्षिक प्रगति के आधार पर समझा जाता है। वहीं व्यक्तित्व विकास में आत्मविश्वास, आत्म-अवधारणा, सामाजिकता, भावनात्मक संतुलन, अनुशासन, सहयोग, नेतृत्व तथा उत्तरदायित्व जैसे गुण सम्मिलित होते हैं। इन दोनों क्षेत्रों पर विद्यार्थी के पारिवारिक वातावरण का गहरा प्रभाव हो सकता है। परिवार बच्चे का पहला सामाजिक और शैक्षिक वातावरण होता है। माता-पिता की शिक्षा और परिवार की आर्थिक स्थिति इसी वातावरण के महत्वपूर्ण घटक हैं।

अभिभावकीय शिक्षा से आशय माता-पिता द्वारा प्राप्त औपचारिक शिक्षा के स्तर से है। शिक्षित अभिभावक सामान्यतः बच्चों की शैक्षिक आवश्यकताओं को समझने, अध्ययन संबंधी कठिनाइयों को पहचानने, उचित मार्गदर्शन देने तथा बच्चों में शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायता कर सकते हैं। इसके विपरीत, कम शैक्षिक स्तर वाले अभिभावक बच्चों के अध्ययन में प्रत्यक्ष सहायता कम कर पाएँ, हालांकि इसका अर्थ यह नहीं है कि वे बच्चों की शिक्षा में सहयोग नहीं कर सकते। पारिवारिक स्नेह, प्रोत्साहन, अनुशासन और बच्चों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण भी अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं।

वर्ष 2011 में किए गए एक बड़े अध्ययन में 3,233 किशोरों के आँकड़ों का विश्लेषण किया गया। अध्ययन में पाया गया कि अभिभावकों की शिक्षा किशोरों की सामान्य बौद्धिक क्षमता से संबंधित थी, जबकि पारिवारिक आय का स्वतंत्र संबंध नहीं पाया गया। इससे यह संकेत मिलता है कि परिवार की शैक्षिक पूंजी और आय को समान मानना उचित नहीं है।

अभिभावकीय शिक्षा की भूमिका

अभिभावकों की शिक्षा बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण पारिवारिक कारक है। शिक्षित माता-पिता बच्चों को नियमित अध्ययन, समय-प्रबंधन, पाठ्यपुस्तकों के उपयोग तथा परीक्षा की तैयारी के संबंध में मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं। वे बच्चों के विद्यालयी कार्यों में रुचि ले सकते हैं और आवश्यकता पड़ने पर शिक्षकों से संपर्क करके बच्चे की प्रगति के संबंध में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

अभिभावकीय शिक्षा का प्रभाव केवल परीक्षा के अंकों तक सीमित नहीं रहता। जब माता-पिता बच्चों को प्रश्न पूछने, अपने विचार व्यक्त करने तथा अपनी समस्याओं पर चर्चा करने का अवसर देते हैं, तब बच्चों में आत्मविश्वास और स्वतंत्र चिंतन की क्षमता विकसित हो सकती है। इस प्रकार अभिभावकीय शिक्षा अप्रत्यक्ष रूप से व्यक्तित्व विकास में भी योगदान कर सकती है।

वर्ष 2020 के अध्ययन में पाया गया कि परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति से संबंधित विभिन्न घटकों में अभिभावकों की शैक्षिक स्थिति बच्चों के भाषा तथा गणित संबंधी शैक्षिक परिणामों से विशेष रूप से जुड़ी थी। अध्ययन ने यह भी पाया कि पालन-पोषण की पद्धति तथा बच्चों की सीखने की प्रवृत्ति इस संबंध में मध्यस्थ भूमिका निभाती है। इससे स्पष्ट होता है कि केवल अभिभावकों की शिक्षा का स्तर ही महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि उस शिक्षा के माध्यम से बच्चों के लिए निर्मित पारिवारिक शैक्षिक वातावरण भी महत्वपूर्ण है।

पारिवारिक आय की भूमिका

पारिवारिक आय विद्यार्थियों के विकास के लिए उपलब्ध भौतिक संसाधनों को प्रभावित करती है। पर्याप्त आय वाले परिवार बच्चों के लिए पुस्तकें, अध्ययन सामग्री, लेखन सामग्री, संगणकीय साधन, इंटरनेट सुविधा, निजी अध्ययन स्थान तथा अन्य शैक्षिक संसाधन उपलब्ध कराने में अपेक्षाकृत सक्षम हो सकते हैं। इसी प्रकार ऐसे परिवार बच्चों को खेल, संगीत, कला, सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा अन्य सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में भाग लेने के अवसर भी प्रदान कर सकते हैं।

दूसरी ओर, कम आय वाले परिवारों में आर्थिक सीमाएँ विद्यार्थियों के शैक्षिक अवसरों को प्रभावित कर सकती हैं। कभी-कभी ऐसे विद्यार्थियों को अध्ययन सामग्री की कमी, सीमित तकनीकी सुविधाओं, घरेलू जिम्मेदारियों अथवा अन्य आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। इन परिस्थितियों का प्रभाव उनके अध्ययन के समय और विद्यालयी सहभागिता पर पड़ सकता है।

हालांकि पारिवारिक आय और शैक्षिक उपलब्धि के बीच संबंध को सीधा और निश्चित नहीं माना जा सकता। वर्ष 2011 के अध्ययन में अभिभावकीय शिक्षा और किशोरों की बौद्धिक क्षमता के बीच संबंध पाया गया, जबकि पारिवारिक आय का स्वतंत्र संबंध नहीं पाया गया। इससे यह समझने में सहायता मिलती है कि आर्थिक संसाधन महत्वपूर्ण होने के बावजूद परिवार की शैक्षिक संस्कृति भी विद्यार्थी के विकास में विशेष भूमिका निभाती है।

अभिभावकीय शिक्षा और शैक्षिक उपलब्धि

अभिभावकों की शैक्षिक योग्यता बच्चों के अध्ययन के प्रति परिवार के दृष्टिकोण को प्रभावित कर सकती है। उच्च शैक्षिक योग्यता वाले माता-पिता सामान्यतः शिक्षा के दीर्घकालिक महत्व को अधिक स्पष्ट रूप से समझते हैं और बच्चों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। वे बच्चों के लिए अध्ययन का निश्चित समय निर्धारित करने, नियमितता बनाए रखने और परीक्षा संबंधी तैयारी करने में सहायता कर सकते हैं।

इसके अतिरिक्त, शिक्षित माता-पिता बच्चों में पढ़ने की आदत तथा सीखने की जिज्ञासा विकसित करने में सहायता कर सकते हैं। घर में पुस्तकों का वातावरण, समाचार-पत्र पढ़ने की आदत, शैक्षिक विषयों पर चर्चा तथा बच्चों के प्रश्नों का उत्तर देने की प्रवृत्ति उनके बौद्धिक विकास को प्रोत्साहित कर सकती है। वर्ष 2020 के शोध में भी अभिभावकीय शिक्षा को बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि से महत्वपूर्ण रूप से संबंधित पाया गया।

पारिवारिक आय और शैक्षिक अवसर

परिवार की आर्थिक स्थिति विद्यार्थियों को प्राप्त होने वाले शैक्षिक अवसरों की मात्रा और गुणवत्ता को प्रभावित कर सकती है। उच्च आय वाले परिवार अतिरिक्त शिक्षण, अध्ययन सामग्री, पुस्तकालय, तकनीकी उपकरण तथा विभिन्न शैक्षिक गतिविधियों पर अधिक व्यय कर सकते हैं। इससे विद्यार्थियों को विद्यालयी पाठ्यक्रम से बाहर भी सीखने के अवसर प्राप्त हो सकते हैं।

इसके विपरीत, निम्न आय वाले परिवारों के विद्यार्थियों के पास कभी-कभी सीमित शैक्षिक संसाधन होते हैं। भारत में किशोरों के संज्ञानात्मक और असंज्ञानात्मक कौशल पर किए गए वर्ष 2022 के एक बड़े अध्ययन में सामाजिक-आर्थिक स्थिति और विभिन्न कौशलों के बीच स्पष्ट सकारात्मक संबंध पाया गया। अध्ययन में पढ़ने,

गणितीय क्षमता और आत्म-प्रभावकारिता जैसे परिणामों में सामाजिक-आर्थिक स्तर के साथ अंतर दिखाई दिया।

अभिभावकीय शिक्षा और व्यक्तित्व विकास

व्यक्तित्व विकास में परिवार की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षित अभिभावक बच्चों के साथ संवाद करते समय तर्क, चर्चा और विचार-विमर्श को अधिक अवसर दे सकते हैं। इससे बच्चों में स्वतंत्र विचार, आत्मविश्वास और निर्णय लेने की क्षमता विकसित हो सकती है। जब माता-पिता बच्चों की बात ध्यान से सुनते हैं तथा उन्हें अपनी समस्याओं के समाधान में भाग लेने देते हैं, तब उनमें उत्तरदायित्व और आत्मनिर्भरता का विकास हो सकता है।

अभिभावकीय शिक्षा बच्चों में शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में भी सहायता कर सकती है। माता-पिता यदि स्वयं अध्ययन और ज्ञान को महत्व देते हैं, तो बच्चे भी शिक्षा को जीवन के महत्वपूर्ण हिस्से के रूप में देख सकते हैं। इस प्रकार अभिभावकीय शिक्षा का प्रभाव बच्चों के व्यक्तित्व पर प्रत्यक्ष के साथ-साथ अनुकरण और पारिवारिक वातावरण के माध्यम से अप्रत्यक्ष रूप से भी पड़ सकता है।

पारिवारिक आय और व्यक्तित्व विकास

पारिवारिक आय व्यक्तित्व विकास को मुख्यतः अवसरों और अनुभवों के माध्यम से प्रभावित कर सकती है। आर्थिक रूप से सक्षम परिवार बच्चों को खेल, संगीत, कला, भ्रमण तथा सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने के अधिक अवसर दे सकते हैं। इन अनुभवों से विद्यार्थियों में सहयोग, नेतृत्व, रचनात्मकता, आत्मविश्वास और सामाजिकता विकसित हो सकती है।

इसके विपरीत, सीमित आर्थिक संसाधनों वाले परिवारों में विद्यार्थियों को इन गतिविधियों में भाग लेने के कम अवसर मिल सकते हैं। हालांकि इसका अर्थ यह नहीं है कि निम्न आय वाले परिवारों के बच्चों में व्यक्तित्व विकास कम होगा। परिवार का भावनात्मक समर्थन, शिक्षक का सहयोग, मित्र समूह और विद्यार्थी की व्यक्तिगत क्षमता आर्थिक सीमाओं के प्रभाव को कम कर सकते हैं।

वर्ष 2022 के भारतीय अध्ययन में सामाजिक-आर्थिक स्थिति का संज्ञानात्मक तथा असंज्ञानात्मक कौशलों के साथ सकारात्मक संबंध पाया गया। शोध में उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति के साथ आत्म-प्रभावकारिता तथा अन्य कौशलों में बेहतर परिणामों का संबंध दिखाई दिया।

अभिभावकीय व्यवहार की मध्यस्थ भूमिका

अभिभावकीय शिक्षा और पारिवारिक आय का प्रभाव बच्चों पर सीधे नहीं पड़ता, बल्कि पालन-पोषण की शैली के माध्यम से भी पड़ सकता है। अभिभावक बच्चों के साथ किस प्रकार व्यवहार करते हैं, उन्हें कितना समय देते हैं, उनकी पढ़ाई में कितनी रुचि लेते हैं और उनकी उपलब्धियों को किस प्रकार प्रोत्साहित करते हैं—ये सभी बातें विद्यार्थी के शैक्षिक तथा व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करती हैं।

वर्ष 2022 के एक दीर्घकालिक अध्ययन में किशोरों के संज्ञानात्मक नियंत्रण के विकास और पारिवारिक सामाजिक-आर्थिक स्थिति के बीच संबंध का अध्ययन किया गया। इसमें पाया गया कि सामाजिक-आर्थिक स्थिति का प्रभाव अभिभावकीय स्नेह और निगरानी के साथ मिलकर अलग-अलग रूप में दिखाई देता है। कम सामाजिक-आर्थिक स्थिति के साथ कम अभिभावकीय स्नेह होने पर संज्ञानात्मक प्रदर्शन अपेक्षाकृत कमजोर था, जबकि उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति और पर्याप्त अभिभावकीय निगरानी के साथ प्रदर्शन में अधिक सुधार देखा गया।

इससे स्पष्ट होता है कि पारिवारिक आय को अकेले नहीं देखा जाना चाहिए। परिवार की आर्थिक स्थिति के साथ-साथ अभिभावकीय व्यवहार भी विद्यार्थियों के विकास का महत्वपूर्ण माध्यम है।

सीखने की प्रवृत्ति और शैक्षिक उपलब्धि

विद्यार्थी की सीखने की प्रवृत्ति उसकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण कारक है। यदि विद्यार्थी पढ़ाई को उपयोगी समझता है, नियमित अध्ययन करता है और कठिनाइयों के बावजूद प्रयास जारी रखता है, तो उसकी शैक्षिक उपलब्धि बेहतर हो सकती है। परिवार का वातावरण इस सीखने की प्रवृत्ति को विकसित करने में सहायता कर सकता है।

वर्ष 2020 के अध्ययन ने पाया कि पारिवारिक सामाजिक-आर्थिक स्थिति और बच्चों के शैक्षिक परिणामों के बीच संबंध में बच्चों की सीखने की प्रवृत्ति महत्वपूर्ण मध्यस्थ भूमिका निभाती है। इसी प्रकार वर्ष 2022 के अध्ययन में परिवार की सांस्कृतिक पूँजी, अभिभावकीय सहभागिता तथा सीखने के प्रति दृष्टिकोण को माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित पाया गया।

संज्ञानात्मक विकास और अभिभावकीय शिक्षा

अभिभावकीय शिक्षा का विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक विकास से भी संबंध हो सकता है। शिक्षित माता-पिता बच्चों के साथ अधिक विविध विषयों पर चर्चा कर सकते हैं, उनके प्रश्नों को प्रोत्साहित कर सकते हैं और समस्या-समाधान की गतिविधियों में सहायता कर सकते हैं। इससे विद्यार्थियों की भाषा, तर्क, स्मृति और समस्या-समाधान संबंधी क्षमताओं के विकास में सहायता मिल सकती है।

वर्ष 2011 के अध्ययन में अभिभावकीय शिक्षा किशोरों की सामान्य बौद्धिक क्षमता का महत्वपूर्ण पूर्वानुमानक पाई गई, जबकि पारिवारिक आय का स्वतंत्र संबंध नहीं मिला। यह निष्कर्ष इस बात की ओर संकेत करता है कि परिवार की शैक्षिक संस्कृति और अभिभावकीय शिक्षा बच्चों के बौद्धिक विकास के लिए महत्वपूर्ण हो सकती है।

आत्मविश्वास और आत्म-प्रभावकारिता

व्यक्तित्व विकास में आत्मविश्वास और आत्म-प्रभावकारिता का महत्वपूर्ण स्थान है। विद्यार्थी जब यह विश्वास करता है कि वह कठिन कार्यों को पूरा कर सकता है, तब वह चुनौतियों का सामना अधिक सक्रियता से कर सकता है। परिवार और विद्यालय दोनों इस विश्वास के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

भारत में किशोरों पर किए गए वर्ष 2022 के अध्ययन में सामाजिक-आर्थिक स्थिति और आत्म-प्रभावकारिता के बीच सकारात्मक संबंध पाया गया। अध्ययन में सामाजिक-आर्थिक स्थिति के उच्च स्तर के साथ कई संज्ञानात्मक और असंज्ञानात्मक कौशलों में बेहतर परिणाम देखे गए। इससे यह संकेत मिलता है कि पारिवारिक संसाधन विद्यार्थियों के विकास में केवल परीक्षा परिणामों के माध्यम से नहीं, बल्कि उनके आत्मविश्वास और अन्य व्यक्तिगत कौशलों के माध्यम से भी योगदान कर सकते हैं।

विद्यालय की भूमिका

विद्यालय सामाजिक-आर्थिक असमानताओं के प्रभाव को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। यदि विद्यालय सभी विद्यार्थियों को समान अध्ययन सामग्री, पुस्तकालय, खेलकूद, सांस्कृतिक गतिविधियों, परामर्श और नेतृत्व के अवसर उपलब्ध कराता है, तो आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों को भी अपने व्यक्तित्व और क्षमताओं के विकास का अवसर प्राप्त हो सकता है।

शिक्षक की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। शिक्षक यदि विद्यार्थियों की पारिवारिक पृष्ठभूमि से प्रभावित हुए बिना समान व्यवहार करते हैं, तो विद्यार्थियों में आत्मसम्मान और विद्यालय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हो सकता है। आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों के लिए अतिरिक्त शैक्षिक सहायता, अध्ययन सामग्री तथा मार्गदर्शन उपलब्ध कराया जाना उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सुधार के लिए उपयोगी हो सकता है।

अभिभावक-विद्यालय सहयोग

विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि और व्यक्तित्व विकास को बढ़ावा देने के लिए अभिभावक तथा विद्यालय के बीच निरंतर सहयोग आवश्यक है। अभिभावकों को बच्चों की विद्यालयी प्रगति के बारे में जानकारी रखनी चाहिए और शिक्षकों के साथ नियमित संपर्क बनाए रखना चाहिए। विद्यालय को भी अभिभावकों को यह समझाने की आवश्यकता है कि बच्चों की शिक्षा केवल परीक्षा के अंकों तक सीमित नहीं है, बल्कि उनके व्यक्तित्व, व्यवहार और सामाजिक कौशल का विकास भी समान रूप से महत्वपूर्ण है।

अभिभावकीय सहभागिता और विद्यालयी व्यवहार के संबंध पर किए गए शोध से यह स्पष्ट हुआ है कि माता-पिता की सक्रिय सहभागिता विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा विद्यालयी व्यवहार से संबंधित हो सकती है। सामाजिक-आर्थिक स्थिति इस संबंध की प्रकृति को प्रभावित कर सकती है। इसलिए आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के विद्यार्थियों के लिए अभिभावक-विद्यालय सहयोग और भी महत्वपूर्ण हो जाता है।

सामाजिक-आर्थिक स्थिति और असमानता

सामाजिक-आर्थिक असमानता विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध अवसरों में अंतर पैदा कर सकती है। उच्च आय और उच्च शैक्षिक स्तर वाले परिवारों के बच्चों को अध्ययन, मनोरंजन, खेल, तकनीकी साधन और अतिरिक्त शिक्षण के अधिक अवसर मिल सकते हैं। दूसरी ओर, कम आय वाले परिवारों के बच्चों को सीमित संसाधनों में शिक्षा प्राप्त करनी पड़ सकती है।

फिर भी यह आवश्यक नहीं है कि उच्च आय वाले परिवार का प्रत्येक विद्यार्थी उच्च उपलब्धि प्राप्त करे और निम्न आय वाले परिवार का प्रत्येक विद्यार्थी कम उपलब्धि प्राप्त करे। व्यक्तित्व, अभिप्रेरणा, परिश्रम, विद्यालयी वातावरण और परिवार का भावनात्मक समर्थन इन संबंधों को प्रभावित करते हैं। वर्ष 2022 के शोध में भी

यह पाया गया कि संज्ञानात्मक तथा असंज्ञानात्मक कौशलों में व्यक्तिगत अंतर केवल सामाजिक-आर्थिक स्थिति से निर्धारित नहीं होते।

शैक्षिक उपलब्धि और व्यक्तित्व का परस्पर संबंध

शैक्षिक उपलब्धि और व्यक्तित्व विकास एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। अनुशासित, आत्मविश्वासी, परिश्रमी और उत्तरदायी विद्यार्थी सामान्यतः अध्ययन में अधिक नियमितता दिखा सकता है। दूसरी ओर, शैक्षिक सफलता से विद्यार्थी के आत्मविश्वास और आत्म-अवधारणा में वृद्धि हो सकती है। इस प्रकार दोनों के बीच पारस्परिक संबंध स्थापित हो सकता है।

वर्ष 2022 के शोध में यह भी पाया गया कि व्यक्तित्व से संबंधित असंज्ञानात्मक कौशल और संज्ञानात्मक कौशल दोनों सामाजिक-आर्थिक स्थिति के साथ अलग-अलग स्तर पर जुड़े हुए थे। इसलिए विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को केवल परीक्षा परिणाम के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है। उनके व्यक्तित्व, आत्मविश्वास, सामाजिक कौशल और सीखने की प्रवृत्ति को भी अध्ययन में सम्मिलित करना आवश्यक है।

निष्कर्ष

माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं व्यक्तित्व विकास में अभिभावकीय शिक्षा और पारिवारिक आय दोनों की महत्वपूर्ण भूमिका है, किंतु दोनों का प्रभाव समान प्रकृति का नहीं होता। अभिभावकीय शिक्षा विद्यार्थियों के अध्ययन संबंधी मार्गदर्शन, शैक्षिक आकांक्षा, सीखने की प्रवृत्ति, बौद्धिक विकास तथा पारिवारिक शैक्षिक वातावरण को प्रभावित कर सकती है। दूसरी ओर, पारिवारिक आय विद्यार्थियों को उपलब्ध भौतिक एवं शैक्षिक संसाधनों, अध्ययन सामग्री, तकनीकी साधनों तथा सह-पाठ्यक्रम अवसरों को प्रभावित कर सकती है। उपलब्ध शोध से यह संकेत मिलता है कि अभिभावकीय शिक्षा कई परिस्थितियों में बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि और बौद्धिक विकास से विशेष रूप से संबंधित होती है, जबकि पारिवारिक आय का प्रभाव संसाधनों और पारिवारिक वातावरण के माध्यम से दिखाई दे सकता है।

इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा व्यक्तित्व विकास को केवल विद्यालय की शिक्षण प्रक्रिया के आधार पर नहीं समझा जा सकता। परिवार की शैक्षिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि, अभिभावकीय सहभागिता, पालन-पोषण की शैली, सीखने की प्रवृत्ति तथा विद्यालयी वातावरण को एक साथ समझना आवश्यक है। वर्ष 2022 के भारतीय शोध में सामाजिक-आर्थिक स्थिति और किशोरों के

संज्ञानात्मक तथा असंज्ञानात्मक कौशलों के बीच स्पष्ट संबंध पाया गया, जो इस विषय के महत्व को और अधिक स्पष्ट करता है।

अतः माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए ऐसी व्यवस्था आवश्यक है जिसमें आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के विद्यार्थियों को समान शैक्षिक अवसर उपलब्ध हों। विद्यालयों को अध्ययन सामग्री, पुस्तकालय, परामर्श, खेलकूद, सांस्कृतिक गतिविधियों तथा नेतृत्व के अवसर उपलब्ध कराने चाहिए। अभिभावकों को बच्चों की शिक्षा में सक्रिय रूप से सहभागी बनाया जाना चाहिए। साथ ही, शिक्षकों और अभिभावकों के बीच नियमित संवाद स्थापित किया जाना चाहिए। इस प्रकार अभिभावकीय शिक्षा, पारिवारिक संसाधनों और विद्यालयी सहयोग के संयुक्त प्रयास से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के साथ-साथ उनके आत्मविश्वास, अनुशासन, सामाजिकता, उत्तरदायित्व और समग्र व्यक्तित्व का विकास किया जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. अयूब, एम., गोस्लिंग, एस. डी., पॉटर, जे., शनाहन, एम., एवं रॉबर्ट्स, बी. डब्ल्यू. (2018). माता-पिता की सामाजिक-आर्थिक स्थिति, व्यक्तित्व और जीवन प्रभाव के बीच संबंध। सामाजिक मनोवैज्ञानिक एवं व्यक्तित्व विज्ञान, 9(3), 338–325।
2. एकी, आर., कोपलैंड, डब्ल्यू., कोस्टेलो, ई. जे., एवं सिमियोनोवा, ई. (2018). परिवार में बच्चों के व्यक्तित्व, गुण और व्यवहार पर प्रभाव। अमेरिकी आर्थिक समीक्षा, 108(3), 775–827।
3. डुआन, डब्ल्यू., गुआन, वाई., एवं बू, एच. (2018). कनिष्ठ विद्यालय के छात्रों की शुरुआत उपलब्धि और विद्यालयी व्यवहार पर माता-पिता की प्रशंसा और सामाजिक-आर्थिक स्थिति का प्रभाव। दार्शनिक अध्ययन, 9, 952।
4. डेलानी, एल., हार्मन, सी., एवं रेडमंड, सी. (2011)। अभिभावकीय शिक्षा, कक्षा उपलब्धि और आय एसोसिएटेडियेन्ट्स। शिक्षा अर्थशास्त्र समीक्षा, 30(6), 1136–112। साइंसडायरेक्ट
5. मनोज तिवारी 2011. मित्र की बुद्धि का संबंध उनके माता-पिता के स्टार्टअप स्तर से, मित्र परिवार आय से नहीं। व्यक्तित्व एवं वैयक्तिक संस्करण, पचास(7), 1062-1067। साइंसडायरेक्ट

6. संजय यादव 2020। परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति और बच्चों के आरंभिक परिणाम: पालन-पोषण की कार्यप्रणाली और बच्चों की शिक्षा की मध्यस्थ भूमिका। बाल एवं युवा सेवा समीक्षा, 118, 105387। साइंसडायरेक्ट